भजन

तर्ज–ये तो प्रेम की बातें है उधो...

नूर नीर खीर दधी सागर, घृत मधु एक ठौर
रस सर्वरस आठ है सागर,बिना मोमिन ना पावे कोई और
1–नूर सागर धनी का नूर आला,नूर से चमके अर्श वो सारा
नूर बाग पसु पंखी जानवर, बिना नूर ना खाली कोई ठौर
2–नीर सागर रूहों की शोभा, नही इसका नमूना कोई दूजा
एक दिल और एक ही चित्त है, वाहेदत और इश्क की है ठौर
3–चौथा सागर देखो हक सिनगार,शोभा का ना कोई पारावार
जब देखा हक सिनगार, ना दिखाई दिया कछु और
4–सागर पांचवा इश्क का पूर्ण,सुख लेते अर्श के मोमिन
जो डूबा कदी इश्क सागर, पिये प्याले पे प्याले चले दौर
5–हके इलम दिया जिसे अपना,टूटा उसका झूठा सपना
वो कौन कहां से है आई, जाना इल्म से हुआ फिर भोर
6–निसबत तो हककी जात,खातिर निसबत की लाए कुल बिसात
इलम,जोश,हुकम और मेहर के बिना,निसबत ना पावे कोई और
7–मेहर जिसपे धनी आप करते,दिल अर्श है उसका करते
मेहर पल पल पिया से मिलाए,फिर न चलता माया का कोई जोर